मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -3 | अंक - 5 | जयपुर | फरवरी - अप्रैल 2017 | पृष्ठ संख्या - 1

निदेशक की कलम से...

आचार्य डॉ. उदयकुमार आर यारागट्टी

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर

संस्थान परिवार के सभी सदस्यों को सादर नमस्कार! हमारे संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली राजभाषा हिन्दी की त्रैमासिक पत्रिका ''मालवीय प्रकाश'' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका के पाँचवें अंक के जरिए मैं आप सभी से जुड़ रहा हूँ, इसकी मुझे असीम प्रसन्नता है। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन तथा भविष्य में प्रकाशित होने वाले सभी अंकों के स्वर्णिम भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

हिन्दी हमारे राष्ट्र की वो भाषा है जिसमें विचारों को अभिव्यक्त करने की अद्भूत क्षमता है। हिन्दी भाषा सहज और सरल होने के साथ-साथ सभी भाषाओं की जननी भी है तथा इसी कारण से यह आम बोलचाल की भाषा भी है और लोकप्रिय भी है।

हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम राजकीय कार्यों के निष्पादन एवं निस्तारण में हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

संस्थान के सभी सदस्यों से मेरा अनुरोध है कि साहित्य सृजन के उद्देश्य से इस पत्रिका के द्वारा अपने सारगर्भित विचार, लेख, कथा, कविता इत्यादि सम्पादक मण्डल को भेजें और पाठकों से जुड़ने का प्रयत्न करें। आपके अच्छे विचारों से आपस में एक नए संस्कारित समूह का निर्माण होगा और आपकी सुसंस्कृत विचारधारा से हमारी नई विद्यार्थी पीढ़ी को भी मार्गदर्शन मिलेगा। आपकी विचारधारा से कई पाठक लाभान्वित भी होंगे ऐसा मेरा मानना है।

संस्थान को समय-समय पर केन्द्रीय सरकार की ओर से राजभाषा हिन्दी में कार्यों के निष्पादन के लिए निर्देश प्राप्त होते हैं। हमें इसकी निष्ठा से अनुपालना करनी है। हमें इसका भी स्मरण रखना चाहिए कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें और अन्य लोगों को भी इसकी प्रेरणा दें।

हमारा संस्थान देश के सुविख्यात संस्थानों में से एक है। अतः संस्थान के सभी सदस्यों का यह दायित्व है कि वो अपने कर्तव्यों के निर्वाह के साथ-साथ संस्थान के उत्थान के उद्देश्य को ध्यान में रखकर अपने सकरात्मक प्रयास कर, हिंदी के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देने का प्रयास करें।

जय हिन्द, जय भारत।

आचार्य डॉ. उदयकुमार आर यारागट्टी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

''अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है।''
मदन मोहन मालवीय

एक अनमोल शख्सियत

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

''जन्म''

कौन सा दिन ऐसा होता है और कौन सी तारीख ऐसी जिसमें बालकों के जन्म नहीं होते पर इन जन्म लेने वाले बालकों में कोई ऐसा भी होता है, जिसके जन्म के कारण उसे जन्म देने वाली तिथि इतिहास में स्मरणीय हो जाती है, स्वयं इतिहास बन जाती है। यही सम्मान मालवीय जी की जन्मतिथि 25 दिसम्बर, 1861 को प्राप्त है। पण्डित बृजनाथ और श्रीमती मूनादेवी को पंचम सन्तान के रूप में पराधीन जन्मभूमि का दर्द लेकर, भूखे देशवासियों की पीड़ा लेकर और धर्म का सच्चा प्रकाश लेकर पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म हुआ। जिस दिन पण्डित मदन मोहन मालवीय का जन्म हुआ, उसके कई सौ वर्ष पूर्व उसी दिन प्रभु ईसा मसीह का भी जन्म हुआ था। प्रभु ईसा मसीह के जन्म दिन की पवित्रता को अपने-जीवन में पण्डित मदन मोहन मालवीय ने अक्षुण्ण बनाये रखा।

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय के जन्म विषयक एक रोचक कथा है। जब बृजनाथ जी अपने पितरों का श्राद्ध करने गये थे, तब पुरोहित ने पूछा कि आप क्या आशीर्वाद चाहते है? पण्डित बृजनाथ जी ने कहा ''मैं ऐसा पुत्र चाहता हूँ जैसा न कभी पहले हुआ न आगे होगा।'' मालवीय परिवार में यह विश्वास है कि महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी उसी आशीर्वाद के फलस्वरूप उत्पन्न हुए थे।

भारत के इतिहास में सन् 1861 ई. का निःसन्देह महत्वपूर्ण स्थान है। ब्रिटिश संसद ने 1861 ई. में ऐसी कौसिंलों के संगठन की व्यवस्था की जिनके अधिकार बहुत सीमित और जिनके सब सदस्य सरकार द्वारा मनोनीत होते थे। इसी वर्ष ब्रिटिश साम्राज्य को सुरक्षित एवं स्थायी बनाये रखने के लिए भारत की सेना में ब्रिटिश सिपाहियों का अनुपात बढ़ा दिया। भारतीय सैनिकों को जाति, सम्प्रदाय और क्षेत्रीयता के आधार पर विभिन्न कम्पनियों में विभाजित किया गया ताकि उनमें राष्ट्रीयता की भावना जागृत न हो सकें।

परन्तु यह वर्ष भारत के लिए बड़ा सुखदायी सिद्ध हुआ। इसी वर्ष भारत के तीने अनमोल रत्न और पैदा हुए, जिन्होंने अपने कार्यों से भारत का नाम संसार में उजागर किया। महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय के अतिरिक्त जिन तीन महापुरुषों ने इसी वर्ष जन्म लिया वे थे पण्डित मोतीलाल नेहरू, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर और आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय। इन चारों बच्चों ने कालान्तर में अपनी प्रतिभा से माता का मस्तक ऊँचा किया तथा साम्राज्यशाही की भावना से अनुप्रणित ब्रिटिश राजनीतिज्ञों और अधिकारियों को भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणाएँ और नीति-रीति बदलने पर मजबूर किया।

''शैशव काल''

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय पर परिवार की आर्थिक स्थिति का, माता-पिता के शील तथा स्नेह का एवं पितामह की भगवद्भक्ति एवं धर्मनिष्ठा का गहरा प्रभाव पड़ा। परिवारवारिक आर्थिक दशा ने महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय को सादा सरल जीवन व्यतीत करने की ओर प्रेरित किया तथा उनके हृदय में निर्धनता के प्रति सहानुभूति जागृत हुई। आठ वर्ष की उम्र में ही उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और पिताजी ने उन्हें गायत्री मंत्र की दीक्षा दी।

शेष पृष्ठ 4 पर...

ईश्वरीय सत्ता

''ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथेव भजाम्यहम।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या पार्थ सर्वशः।।''

हे प्रथानन्दन, जो भक्त मेरी जिस प्रकार शरण लेता है, मैं उन्हें उसी प्रकार आश्रय देता हूँ क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे मार्ग का ही अनुसरण करते हैं।

भगवान यहाँ अपने स्वभाव का वर्णन करते हैं। सभी मनुष्य भगवान के मार्ग का ही अनुवर्तन कर रहे हैं। इतने पर भी संसार में अनन्त काल से भटक रहे हैं। प्राणी मात्र आनन्द चाहता है। दुःख से दूर होना चाहता है। आनन्द का अनुवर्तन अर्थात् परमात्मा का अनुवर्तन क्योंकि आनन्दस्वरूप भगवान ही है। लेकिन भगवान का एक नियम है कि आप आनन्द आप किस प्रकार पाना चाहते हो, उसी प्रकार आपकी प्रगति (सुख) या अद्योगति (दुःख पतन) होती है। इसीलिये संसार में विपरीत क्रियाएँ करते हुए भी मनुष्य आनन्द का अनुभव करते हैं। भगवान ने कहा है जो जिस प्रकार मेरी शरण में आता है मैं उसे उसी प्रकार से आश्रय देता हूँ। शरण तो जीव प्रत्येक दशा में किसी न किसी की लेता ही है यह जीव मनुष्य का स्वभाव है।

आपको अपने पौरुष का, साधनों का भरोसा है तो उस पौरूष और साधन की जितनी शक्ति है उसी के अनुसार आपको सफलता प्राप्त होती है। लेकिन जब आप अनन्त शक्ति सर्वात्मा भगवान की शरण लेते हो तो जिस प्रकार आप उनकी शरण लेते हो, उसी प्रकार उनकी कृपा शक्ति कार्य करने लगती है। उनकी शक्ति आपके साथ होती है। व्यक्ति न मृत्यु चाहता है, न अज्ञान चाहता है, न दुःख चाहता है, व्यक्ति जीवन, ज्ञान और आनन्द चाहता है अर्थात् व्यक्ति मात्र सच्चिदानन्द (जहाँ सुखों का अन्त न हो और दुःखों का लेशमात्र भी नहीं) चाहता है, भले वह ईश्वर को स्वीकार न करता हो। परन्तु सत् चित् आनन्द स्वरूप ईश्वर को छोड़कर वह कुछ चाहता ही नहीं। वह जो कुछ चाह रहा है उसकी सत्ता ही अस्वीकार करता है। यह उसकी विवेकहीनता है। उसकी सत्ता को स्वीकार करके जिस प्रकार वह सत्ता के साथ अनुवर्तन करेगा उस सत्ता की शक्ति उसी प्रकार उसे प्राप्त होगी।

ईश्वरीय सत्ता इस प्रकार की है कि हमारी भावना उसमें उसी प्रकार प्रतिफलित होती है जैसे दर्पण में हमारी आकृति इसी प्रकार ईश्वर में हम जिन गुणों का आरोप करते हैं वे हमारे साथ सक्रिय हो जाते हैं और हमारे क्रिया कलाप व्यवहार आदि प्रभावित होने के लगते हैं। जितने अंश में हम ईश्वर पर निर्भर होते हैं उतनी सहायता हमें ईश्वर से मिलती है। अतः यदि हमें आनन्द, परम शान्ति प्राप्त करनी है तो ईश्वर के नित्य सम्बन्ध (भगवान अपने है।) को पहचान कर ईश्वर के शरण होना है। जैसे शिष्य गुरू के, रोगी चिकित्सक के, शरण होता है। जैसे धन की आवश्यकता होने पर धनी व्यक्ति के पास ही ऋण लेने जाना होता है। ऐसे ही यदि ''मानसिक दबाव से मुक्त जीवन और सकारात्मक विचार, प्रसन्नता'' अर्थात् आनन्द प्राप्त करना हो तो आनन्द स्वरूप परमात्मा के बारे में जानकर उनकी शरण लेना है।

शेष पृष्ठ 3 पर...

शुभ विचार

- जो सदा प्रसन्न रहता है, उसके अंदर आलस्य नहीं हो सकता।
- दूसरों का अवगुण न देखना ही सबसे बड़ा त्याग है।
- जीवन का सच्चा विश्राम आत्म अनुभूति में है।
- आपस में दूसरों की विशेषताओं का वर्णन करें, कमियों का नहीं।
- सत्य के सूर्य को असत्य के बादल ढ़क नहीं सकते।
- सत्य को सांसारिक आतंक डरा नहीं सकता।
- सावधान रहिये, आपकी प्रत्येक अभिव्यक्ति की प्रतिक्रिया होती है।
- यदि आप दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं कि आप वह हैं, जो कि आप नहीं हैं, तो मूर्ख कौन बना?
- हर दिन में एक गुह्य राज छिपा है, ऐसा आपने कई बार अनुभव किया होगा।
- यदि भरसक प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती, तो परमात्मा पर छोड़ दें।

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

सर्वप्रथम संस्थान के सभी पाठकों को मालवीय प्रकाश को सराहने, समय समय पर अपने सुझावों से अवगत कराने व भविष्य के लिये इस पत्रिका के प्रकाशन को जारी रखने हेतु प्रोत्साहन देने हेतु बहुत बहुत साधुवाद।

जैसा कि आप सभी को विदित ही है कि इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु दो ही उद्देश्य थे, प्रथम अपनी रचनात्मका को हिंदी भाषा में अभिव्यक्त करने हेतु एवं द्वितीय ''न भूतोः नः भविष्यता'' की उपाधि से सम्मानित विलक्षण प्रतिभा के धनी, महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की स्मृति को पुनः संस्थान के सदस्यों के बीच जीवंत करने हेतु अतः इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये पाँचवा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुये मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

मैं पाठकों से पुनः अनुरोध करना चाहूँगी कि अगले अंक के लिये रूचि के अनुसार अपनी रचनायें हम तक अवश्य पहुंचायें ताकि हम ज्ञान के अथाह सागर में प्रफुल्लित हो डुबकी लगा सकें एवं अपनी बुद्धि व आत्मा की समृद्ध कर सकें।

पत्रिका के पिछले सभी अंकों के प्रकाशन दौरान, संस्थान व संस्थान सदस्यों द्वारा की गई सहायता के लिये मैं सभी की हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूँ व आशा करती हूँ कि भविष्य में भी इसी तरह का सहयोग मिलता रहेगा।

सस्नेह,

भवदीया,

डॉ. ज्योति जोशी,

सम्पादक एवं सह-आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

9413971604, 9549654852, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com

malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से...	1
महामना पं. मदन मोहन मालवीय एक ...	1
सम्पादकीय	1
ईश्वरीय सत्ता	1
शुभ विचार	1
हमारा अपना	2
खुली तिजोरी नहीं	2
सकारात्मक सोच	2
सफर ये चार साल का	2
दोस्ती	2
एक बार है पता	2
आसान नहीं है उड़ना कई मर्तबा गिरना होगा	2
कहानी चंदा	2
एक सवाल	3
बदलाव	3
माँ से बिछुड़ने का दर्द	3
सम्मान की अभिलाषा	3
मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में	3
मंजिल	3
भ्रष्टाचारः कारण व निवारण	4
चलता चल मुसाफिर	4

हमारा अपना?

जी ले जिंदगी यारा बाद मैं ये सब याद आएगा
अरे कर लो आज कल किसने देखा

हम लोग ये शब्द दिन मैं कितनी बार सुनते है शायद हर राह पे हर किसी से जो हमसे बड़ा है जो उस राह से गुजर चुका हो और हम बोलते भी होंगे उनको जिन्होंने ये राह देखी ना होगी।

जिंदगी जीने मैं और जिन्दा रहने में कुछ तो होगा जो सिर्फ चलने वाले को पता होगा।

पर हम है कौन ओर जब सब छूटना ही है तो चिपके क्यों है यादों से बातों से हर चीज से जब सब बदलना है सबको पता है फिर ये जिन्दगी जीना सिर्फ अभी के लिए क्यों हर रोज क्यों नहीं?

पर क्या जिंदगी इतनी आसान है इतना सब तो होता रहता है फिर भी क्यों कौनसी शक्ति होंसला देती है हमें?

क्या है जिससे हम उम्मीद करते हैं? कौन है जो हमें यहाँ धरा पर जोड़े रखें हैं? किसके इसारे पे हम है कौन?

क्या हमारा नाम ही हम है?

अगर हाँ तो नाम बदलते ही हम बदल जायेंगे क्या? और ईश्वर के तो अनंत नाम है फिर अनंत ईश्वर हुए फिर सबका मालिक एक कैसे हुआ? अगर नहीं तो हम हैं कौन? क्या शरीर अगर हां तो मरता कौन है?

नहीं शरीर से अलग कुछ और भी है जो हम है।

अगर आत्मा परमात्मा का अंश फिर यहाँ पर क्यों है??

क्या करने आये हैं यहाँ पे क्या करम है।

जब कुछ स्थाई नहीं तो कर्म करना जरूरी क्यों है??

किससे बंधे हैं हम ? किसके लिए करम करते हैं?

हमारा अपना सब सब यही रह जाना है तो?

- प्रतिभा
एम.एस.सी, प्रथम वर्ष (रसायन विज्ञान)

सकारात्मक सोच

सोच के दो दृष्टिकोण होते हैं सकारात्मक सोच और नकारात्मक सोच। सकारात्मक सोच जीवन की सफलताओं को अर्जित करने में सहयोगी है वहीं नकारात्मक सोच जीवन की असफलताओं का कारण बन जाती है। कहा जाता है कि सफलता उन्हीं के कदम चूमती है जो सकारात्मक सोच का दृष्टिकोण रखते हैं। किसी कार्य को करने से पहले ही परिणाम की सोच करने वाले दृष्टिकोण प्रायः नकारात्मक परिणाम का कारण बन जाते हैं क्योंकि किसी कार्य को करने से पहले संशय करना आत्मविश्वास की कमी को करने- से पहले संशय प्रवृत्ति रखने वाले अपने कार्य को पूरा करने से डरते हैं और अपने लक्ष्यों को भी ईमानदारी से पूरा नहीं कर पाते। सकारातमक सोच वाले सदैव अपने जीवन में बड़े और महान बनते हैं। ऐसे लोगों में आत्मविश्वास कूट कूट कर भरा होता है। उनकी सोच भी आशावादी होती है और वे अपने कार्यों के परिणाम के प्रति आश्वस्त रहते हैं।

नकारात्मक सोच रखने वाले लोगों को जीवन में बार-बार असफलताओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनका उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसे लोग जीवन में महान् नहीं बन पाते क्योंकि उन को स्वयं पर ही विश्वास नहीं होता। कभी कभी संशयवश ऐसे लोग अनुकूल परिस्थितियों को भी अपने प्रतिकूल बना लेते हैं।

सकारात्मक सोच रखने वाले संघर्षशील होते है। अपने संघर्ष के बल पर वे जीवन की सफलाओं की ऊँचाईयों को छूते है। हम जैसा सोचते हैं हमारी मानसिकता भी वैसी ही हो जाती है। सोच के अनुरूप ही हमारा मस्तिष्क और शरीर काम करने लग जाता है। सोच से हमारा उम्र भी प्रभावित होती है। सकारात्मक सोच रखने वालों की उम्र भी लम्बी होती है। सकारात्मक सोच का हमारी शरीर की कोशिकाओं तथा विभिन्न रसायनों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

नकारात्मक सोच से हमारी शरीर की रोग प्रतिरोधकता क्षमता कम कर देते हैं।

अतः जीवन को सुखद और आनंदित बनाए रखने के लिए सकारात्मक सोच के साथ जीवन यापन करने के लिए सततः रूप से प्रयत्नशील रहे।

- अंशु सक्सैना (नियोजन एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ)

एक बार है पता

मुश्किले इम्तिहान है सब्र का,
हर आदमजाद इस जलजले को राहें जिंदगी
एक बार है पता
कई ठिकाने, कई आशियाने और जिंदिगिया लुटा देती है,
पर लुटे आशियानों में भी जो जीने का सबब ढूंढते हैं,
उन्हें ये मुकम्मल इंसान बना देती है।
मुश्किलात में छोड़ देता है, खुद का साया भी साथ,
जंग में फतेह नहीं मिलती रखकर हाथो में हाथ,
ऐ इंसान तू खा शपथ,
नहीं बैठेगा इस जंग में भरोसे लकीरे माथ,
जितने को ये जलजला लेगा अपने बाजुओ का साथ।
मुश्किल को मुश्किल न कहो,
इसे मुस्कुरा के सहो,
क्यों के ये खेले मुकद्दर की बात है,
कि कहीं हालात इ ग़मगीन है तो कहीं खुशनुमा माहौल है,
रवि कहता है कि वो शख्स जो हालाते मुश्किल के लिये मुश्किल होता है,
वो ही मुकद्दर का सिंकदर होता है।

- रविकांत यादव
शोधार्थी (रसायन शास्त्र विभाग)

सफर ये चार साल का...

काश वो पल फिर जी पाते
काश वो वक्त फिर लौट आता,
न जाने कब खतम हुआ
ये चार साल का सफर
चार साल जाने कैसे निकल गये
चार साल जाने कैसे निकल गये ...
लगने लगा है अब ऐसे
जी भर के जीलूं जिंदगी जैसे,
सुनहरा अफसर बनाऊँ
जिंदगी का हर पल जैसे,
पर पाबंदी इस वक्त की रूकने नहीं देती ...
और यादे उस दौर की बढ़ने नहीं देती ...
सोचा था दिल की पूरी किताब लिख दूं चंद शब्दों में,
पर जालिम ये पाबंदीयां लिखने नहीं देती,
पर जालिम ये दहलीज बढ़ने नहीं देती ....

- गनोरकर अक्षय
प्रथम वर्ष - एम.टेक 5048

आसान नहीं है उड़ना कई मर्तबा गिरना होगा

आसान नहीं है उड़ना कई मर्तबा गिरना होगा
वो जो ठहरे हैं हवा में
कभी घसीटे गए होंगे जमीं की धूल में,
गर चाह है उस जिंदगी की
जिया जिसे तू सपनों में ....
ना फिक्र कर
तू है उस दिशा में
जहाँ कुछ खास तेरे संग
होने को है...
आँधिया तो आएगी तेरी
जलती लौ को थामने ...
ना घबरा इनसे तु कभी
तू आज में कल को संजो,
कुछ पाना है तो कर गुजर
हो सकता है कई दफा
टूटे तू हर राह पर
आसान नहीं जीना यूं कई मर्तबा मरना होगा!
जो ठान ली तो कर दिखा
मानो जैसे,
मन बसा हो उस मंजिल में
गर ना हुआ तो फिर सही ....
गर हो गया तो कहना क्या!!

- विजय कुमार
तृतीय वर्ष (धातु विज्ञान)

खुली तिजोरी नहीं

खुली तिजोरी नही
मैं कोई खुली तिजोरी नहीं,
खुली किताब बनना चाहती हूँ
ठंडी हवाओं में नहीं ....
तूफानों में बहना चाहती हूँ ...

मालूम है मुझे ...
कि कारे घन अभी छंटे नहीं है,
किनारे भी अब डटे नहीं है,
इंद्र वज्र अब डराए है...
अंधकार मुझपे हावी ...
लेकिन ...
मैं उसपे हावी ...
कश्ती के दिन अभी रूके नहीं है।

भरोसा है मुझे ...
इन किनारों पर ...
इन लहरों पर ...
चुके नहीं, थमे नहीं ...
लेकिन
आखिर में ये ही कहेंगे ...
वाह बेटी !!

गर्व है तुझपे .... तू रूकी नहीं, तु चूकी नहीं!!!
अनन्त में छिपा खजाना नहीं
जो दबा काम दबा रह जाएं।
बिन बरसा पानी नहीं,
जो काले मेघों के संग हवा हो जाए
अरे ठहरो!!!

मैं अकेली बहती धारा नहीं ....
मैं तो तुझ संग, संग-संग, हिलौरें खाती सरिता हूँ।
मैं गंगा, मैं सीता ...
मैं मीरा, मैं दुर्गा ...
मुझमें ही कल्पना, मुझ में ही झांसी ..
मैं ही सिन्धु, मैं ही काशी।

दया मुझ पर नहीं
गाय पर करो ....
मैं तो खुली किताब ठहरी ....
थोड़ा सी पढ़ने की कोशिश
कर जाओ ....

- कोमल मीना
(द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी)

कहानी चंदा

कोसी नदी के प्रकोप से इस वर्ष आयी बाढ़ में कई गाँव जलमग्न हुए और लाखों लोग बेघर हो गये, बहुत से लोग अपने परिवार से बिछुड़ गये और सामान्य जन जीवन लगभग ठप्प सा हो गया, सरकारी स्तर पर हर संभव सहायता की जा रही थी, कई प्रकार के राहत कार्य चल रहे थे, अस्थायी कैम्पों में लोगों के रहने और खाने की व्यवस्था की जा रही थी, मेडिकल सुविधाओं के लिए चिकित्सा शिविर खुल गये थे, सारे देश की जनता इस प्राकृतिक आपदा से व्यथित थी हर स्तर पर देश के कौने कौने से सहायता भेजी जा रही थी, कई स्वंसेवी संस्थायें इसमें अपना सक्रिय रूप से सहयोग भी दी रही थी।

वो रविवार का दिन था। शर्माजी और मैं सुबह के समय बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे, शर्मा जी एक स्वयं सेवी संस्था से जुड़े थे और राहत कार्यों के बारे में मेरे से सलाह कर रहे थे, ऐसे समय दरवाजे पर एक व्यक्ति आया जो चलने फिरने में पूर्ण सक्षम नहीं था, उस व्यक्ति ने बैसाखी का सहारा लिया हुआ था और एक कंधे पर बैग लटकाया हुआ था।

कौन हो भाई आप और क्या काम है? मैंने उसके आगमन पर पूछा।

श्रीमान मैं कोसी नदी के प्रकोप में आयी बाढ़ के लिए चंदा एकत्र कर रहा हूँ, आपसे भी मदद चाहिए सिर्फ दस रूपये, इसी उम्मीद से आपके पास आया हूँ। उसने शांत भाव से उत्तर दिया।

मुझे एक पल आश्चर्य हुआ, मदद वो भी दस रूपये जैसी अल्प राशि की? कुछ स्पष्ट नहीं हो रहा था, मुझे इस विषय में कोई तर्क नहीं लगा हाँ शायद शर्मा जी कुछ कहते उससे पहले ही मैंने उनको रोक दिया और 20 रूपये उस व्यक्ति को दे दिए मैनें कहा, ये 20 रूपये हम दोनों की और से,

शर्मा जी जो इस राहत के कार्य में बहुत कुछ कर रहें थे, आखिर बोल ही पड़े, क्या सहायता करोगे इतने से रूपयों से? उनकी इस बात में एक व्यंग्य और उपहास का स्वर था।

मुझ को उनका इस प्रकार से कहना कुछ अच्छा नहीं लगा, जीवन में कुछ ऐसी बातें होती है जिसका जबाब सिर्फ हाँ या ना होता है तर्क नहीं, यह भी कुछ ऐसा ही मामला था आखिर इतनी अल्प राशि की मदद में व्यर्थ में क्या पूछताछ करना?

वो व्यक्ति भी एक स्वाभिमानी व्यक्ति था उसने बड़ी सहजता से बिना संयम खोये उत्तर दिया।

सहायता या मदद का कोई परिमाप नहीं होता श्रीमान् मुझ में इतनी क्षमता नहीं कि में कुछ बड़ा कर सकूं सारे समाज में सब की इस छोटी सी मदद से बहुत कुछ हो जाता है जब इतनी सी मदद मांगने पर इसके लिये कोई मना भी नहीं करता तो उस समय मुझ को लगता है कि मेरे इस काम में मुझे सारे लोगों का सहयोग और समर्थन मिल रहा है, मैं बिना किसी बाधा के ये कार्य आसानी से कर रहा हूँ।

शर्मा जी का चेहरा देखने लायक था उन्हें इस तर्क का उनको कोई जबाब नहीं सूझा, शर्मा जी को चंदा और सहायता जुटाने में पता नहीं कितने लोगों को समझाना पड़ा फिर भी कहीं कहीं तो ना ही सुनना पड़ा, किन्तु ये एक ऐसा अनजान व्यक्ति जो शारीरिक रूप से सक्षम भी नहीं कितनी सहजता से सहायता कार्य कर रहा है और समाज को एक अच्छे कार्य से जोड़ता चला जा रहा है।

- अंशु सक्सेना
प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ

दोस्ती

एक प्यारा-सा अहसास है दोस्ती
कड़वाहट भरी दुनिया की मिठास है दोस्ती
जीवन में हर पल भरती उल्लास है दोस्ती
दूरी में भी नज़दीकियों का आभास है दोस्ती
एक प्यारा-सा अहसास है दोस्ती

खुशियों का रंगीन लिबास है दोस्ती
मुश्किल वक्त में सहारे की आस है दोस्ती
एक दूसरे पर अटूट विश्वास है दोस्ती
सब रिश्तों से ये रिश्ता खास है दोस्ती
एक प्यारा - सा अहसास है दोस्ती।

एक पल अंकों की होड़ में तकरार है दोस्ती
तो दूसरे पल, लेक्चर बंक करने का करार है दोस्ती
एक दूसरे पर अटूट विश्वास है दोस्ती
सब रिश्तों से ये रिश्ता खा है दोस्ती
एक प्यारा-सा अहसास है दोस्ती।

एक अलग सुनहरा संसार है दोस्ती
कभी माँ का निर्दोष निस्वार्थ प्यार है दोस्ती
कभी पापा की सीख वाली फटकार है दोस्ती
व्यथित मन की खुशियों का द्वारा है दोस्ती
उस दिव्य फ़नकार का अमूल्य उपहार है दोस्ती
एक अलग सुनहरा संसार है दोस्ती
एक प्यारा - सा अहसास है दोस्ती।

- हर्षित जैन
प्रथम वर्ष (बी.टेक), विद्युत अभियांत्रिकी

पृष्ठ 1 का शेष ...

ईश्वरीय सत्ता

मानना है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सुहृद, दयालु, सवन्तिर्यामी सर्व लोक महेश्वर है और साथ ही अपना स्वामी, संचालन कर्ता भी है तब हमें जो कुछ भी प्राप्त करना है तो ईश्वर से ही प्राप्त होगा। यह विश्वास बनाये रखना है।

निश्चिन्तता

निश्चिन्तता दो प्रकार से पायी जा सकती है। अपने प्रयत्न से और अपने को किसी समर्थ के हाथों में पूर्णत: देकर। सफल का आश्रय लेकर इसी क्षण से हम निश्चिन्त हो सकते हैं। गीता का प्रसिद्ध श्लोक 'सर्वधर्मान्पव्यिज्य' के अन्त में 'मा शुच' चिन्ता मत करो शोक मत करो भगवान ने वहाँ जो कहा ''अहं त्वा सर्व पापम्चो मोक्षयिष्यामी'' इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी अदृश्य अचिन्तनीय पाप से भगवान आपको मुक्त कर देंगे। पाप का परिणाम होता है दु:ख, दरिद्रता, रोग, अपकीर्ति, स्वजन वियोग। पाप से मुक्त कर देने का अर्थ ही है, श्रीकृष्ण कहते हैं - हम तुमको इन सब से मुक्त कर देंगे, क्योंकि इनको देने वाले पाप ही जब मिट जायेंगे, मिट जाने पर वृक्ष में पत्ता और फल फूल कहां से आयेगा।

यह तो हमारे आपके विश्वास की कमी है अन्यथा आप भी जानते है कि भगवान सर्वसमर्थ है, सर्वज्ञ है और दयालु है। जो सर्वत्र है, सब कुछ कर सकता है हमारी हर परिस्थिति को जानता है, दयालु है हमारा अपना है। क्योंकि श्री कृष्ण ने कहा है सुहृद सर्वभूताना। ऐसे परमात्मा के हाथ में अपने को छोड़ने के पश्चात् चिन्ता का कारण नहीं रहता। मनुष्य उनके हाथ में अपने को छोड़कर सर्वथा निश्चिन्त हो सकता है। इससे अधिक सरल, इससे अधिक निरामय कोई उपाय नहीं है। गीता में भगवान जब इस बात को कहते हैं तब उसका बहुत अधिक महत्व हो जाता हे। भगवान ने गीता में योगक्षेम वहन की बात की है, पाप नाश की बात की है, अमय देने की बात की, सब आश्वासन अपने श्रीमुख से दिये। अब हमारी श्रद्धा, हमारे विश्वास की दुर्बलता है कि हम बुद्धि से उस सबको समझते जानते हुए भी उस पर स्थिर नहीं रह पाते और यही हमारी विपत्ति, हमारी चिन्ता, हमारे क्लेश का कारण है। अपने आपको भगवान के हाथ में देने के बाद किसी प्रकार का भय, किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रह जाती है।

निर्भयता

सर्वसमर्थ सर्वज्ञ और दयालु भगवान जब जानते हैं कि हम किस परिस्थिति में है और उसे बदलने में समर्थ है जो परिस्थिति आ रही है, केवल इसलिये आ रही है कि उसके आने में उन्हें हमारा हित दिख रहा है। एक रोगी भी उस पीड़ा को सहता है और उस पीड़ा से प्रसन्न होता है जो डॉक्टर के हाथ से प्राप्त होती है। हम अपनी बुद्धि से भगवान को बहुत अधिक बड़ा मानते हैं। हम मानते हैं हमारा हित किसमें है पर उसका निर्णय हम ठीक नहीं कर सकते, भगवान कर सकते हैं। हो सकता है, वह हमें बहुत अप्रिय हो, हो सकता है उसमें हमें बहुत कष्ट हो रहा है, किन्तु यह नहीं हो सकता कि उससे हमारा अमंगल हो। ऐसा जिसको विश्वास है गीता इसी विश्वास का पाठ पढ़ाती है। इस विश्वास वाला कभी भयभीत नहीं होता।

भगवत्शरणगति में पूर्णत: अभय प्राप्त होता है। क्योंकि भगवान सर्वसमर्थ है, दयालु है शरणागत की रक्षा का व्रत लें रखा है उन्होंने इसलिये जो भगवान के शरणागत है उसको भय देने वाला कहीं कोई नहीं है।

ईश्वर कारयिता कब बनता है ?

हम देखते हैं कि जब मनुष्य पर विपत्ति आती है, मनुश्य का अभीष्ट नष्ट होता है तब उसका दोष ईश्वर को देता है लेकिन जब मनुष्य सफल होता है, जब कोई पौरुष प्रकट करता है, सुख पाता है तो उसका कर्ता अपने को मानता है। बहुत सीधी बात है, यह संभव नहीं है कि अच्छे-अच्छे के कर्ता आप हों और बुराई का कर्ता ईश्वर हो। यदि हम अच्छाई और बुराई दोनों का कर्ता ईश्वर को मानते हैं तो कर्म बन्धन से छूट जाते हैं। क्योंकि तब कर्म का अहंकार नहीं आता है। लेकिन यह स्पष्ट बेइमानी है कि अच्छाई हम करते हैं और बुराई ईश्वर करता है। (यही सुख-दु:ख, निराशा, भय का कारण है)।

ईश्वर सच्चिदानन्दघन, अखण्ड, एकरस ओर निर्विकार है। निर्विकार होने के कारण वह कर्ता नहीं है और कारयिता तब होता है जब आप अपने को पूरी तरह ईश्वर पर छोड़ देते हैं। यह तो उसने प्रतिज्ञा की है कि जो जिस प्रकट मेरा भजन करता हे मैं भी उसका उसी प्रकार भजन करता हूँ। इसलिये जब आप कहते हो, मेरा संचालक भगवान है, वह जो चाहे करावे, मैं उसके हाथ का यन्त्र हूँ तब आपके लिये, केवल आपके लिये ईश्वर कारयिता हो जाता है। तब आपकी चिन्ता ईश्वर करने लगता है। तब आपके द्वारा किये कार्य ईश्वर की प्रेरणा से होते है। अत: हम सुख दु:ख से दूर होना है। आनन्द की प्राप्ति करनी है तो आनन्द स्वरूप ईश्वर को की प्राप्ति करनी है तो आनन्द स्वरूप ईश्वर को बुद्धि से जानकर स्वयं से मान लेना है। अनुभव स्वत: हो जायेगा।

- संकलन कर्ता, मंजू गुप्ता

माँ से बिछुड़ने का दर्द

माँ से बिछुड़ने का दर्द वो जाने,
जिसने उसे गंवाया है,
एक हंसती खेलती गुड़िया का,
इस रब ने बचपन चुराया है।

जो हंसती थी हमारे साथ,
उसकी हर मुस्कान छीन ली,
उस प्यारे से चेहरे से,
उसकी चमक छीन ली।

हर बात पर वो समझाती है,
सिक्के के दोनों पहलू बताती है,
हमारी हर बात पर मुस्कुराती है,
पर आज पता चला,
वो अपने अंदर कितना छिपाती है।

उसने हमारे दु:ख भरे मुखो पर,
एक पल में मुस्कान भर दी,
जिसकी फ़िक्र हमें सताती थी,
उसने अपने दु:खों की खान,
हमारी खुशियों में कुर्बान कर दी।

पर उसे कौन समझाए,
ये दिल अभी भी उसकी,
इस मुस्कराहट को स्वीकार नहीं करता,
इस मुस्कान में वो बात नहीं थी,
ताकि मैं उसके ग़मों को भूलता।

वो खुद संभल जाये तो,
हमें भी संभाल पायेगी,
हम अपने दु:खों को दबा नहीं पाये तो,
वो ही शायद हमें खुश कर पायेगी।

- अनिल कुमार
द्वितीय वर्ष (कम्प्यूटर अभियांत्रिकी)

सम्मान की अभिलाषा

बहुत पुरानी बात है। एक व्यक्ति अक्सर धर्मग्रंथों का मजाक उड़ाया करता था। वह नास्तिक था। वह ईश्वर में विश्वास करने वालों का सम्मान नहीं करता था। वह उनसे वैचारिक बहस न करके, कुतर्कों के जरिए उनका मनोबल तोड़ने की कोशिश करता था।

एक दिन वह पादरी के पास पहुँचा। उसका मकसद पादरी को नीचा दिखाना था। उसने पादरी से पूछा, अगर मैं खजूर खाऊँ तो क्या मुझे पाप लगेगा ? पादरी ने सहजता से कहा नहीं। उस व्यक्ति ने फिर पूछा और अगर मैं खजूर के साथ थोड़ा पानी मिला लूं तो क्या मुझे पाप लगेगा ?

पादरी ने उसी तरह कहा इससे भी कोई अंतर नहीं पड़ेगा। उस व्यक्ति ने फिर अगला सवाल किया और महोदय यदि मैं उस खजूर में पानी के साथ थोड़ा खमीर मिला लूं तो क्या यह धार्मिक दृष्टि से गलत होगा ?

पादरी ने उसकी मंशा ताड़ ली पर उन्होंने बिना झुंझलाए कहा - बिल्कुल नहीं। उस पर उस व्यक्ति ने दलील दी- फिर धर्मग्रंथों में शराब पीना पाप क्यों बताया गया है, जबकि शराब इन्हीं तीनो से मिलकर बनती है।

पादरी ने इसका जवाब देने की बजाय उससे प्रश्न किये अगर मैं तुम पर मुठ्ठी पर धूल फेंकू तो क्या तुम्हें चोट लगेगी। इस पर उस ने कहा, नहीं।

पादरी ने कहा और अगर मैं धूल में थोड़ा पानी मिलाकर फेंकू तो क्या तुम्हें चोट लगेगी। उस व्यक्ति ने सिर हिलाकर कहा नहीं।

पादरी ने मुस्कराते हुए फिर पूछा और अगर मैं उस मिट्टी और पानी में कुछ पत्थर मिलाकर तुम्हारे ऊपर फेंकू तो क्या होगा चोट लगेगी कि नहीं।

यह सवाल सुनकर वह थोड़ा घबराया। उसने कुछ सोचकर कहा आप चोट लगने की बात कर रहे हैं, मेरा तो सिर ही फूट जाएगा। पादरी ने कहा मझे विश्वास है कि तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। वह व्यक्ति शर्मिंदा हो गया। उसने अपने व्यवहार के लिए पादरी से क्षमा मांगी और आगे से उसने किसी व्यक्ति से ऐसी गलती नहीं करने का वचन दिया।

संक्षेप में

जिंदगी में अगर आप किसी का अपमान करते हैं तो आप कभी सम्मान नहीं पा सकते हैं। इसलिए छोटा व्यक्ति हो या बड़ा सभी का सम्मान कीजिए।

- संकलनकर्ता, अंशुमन खोलिया
(तकनीशियन, रसायन शास्त्र विभाग)

एक सवाल

वो नन्हीं परी जाने कहाँ खो गई,
आँसूओं की सौगात दे जुदा हो गई,
गूंजती थी घर के आंगन में हँसी जिसकी,
वो आवाज न जाने कहाँ खो गई,
मुस्कुराहट उसकी हर गम भुला देती थी,
जब भी रोते थे हँसा देती थी,
तारों भरा आसमां देख अश्क पलकों पर उतर आया
पलकें जो झपकी तो नूर उसका नजर आया,
लोग तारों को तेरा घर बताते हैं,
अश्क मेरे वहाँ तक कहाँ पहुँच पाते हैं।
माना तारों की वो दुनिया,
इस जहाँ से अच्छी है,
पर वुला रही है हर बूंद,
जो इन आँखों से टपकी है,
वीराने आ आंगन में
वो माँ बेसुध सी बैठी है,
लौट आएगी परी उसकी
वो अब भी ये कहती है,
उस बाप का दिल भी जार जार रोया है,
रूह को अपनी जिसने यू खोया है,
जिस बहन की खुशी की खातिर,
तो अपनी इच्छा छुपा गया,
कहकर खुद को पत्थरदिल सा,
अपना हर गम दबा गया,
फंदे से लटकी बहन देख अपनी,
आई मोम सा पिछल गया,
दुआएँ उसकी लौट आने की,
न कबूल हो रही,
बेखबर इन सबसे,
तो नन्हीं परी सो रही,
चली गई तू दूर बहुत पर,
कुछ सवाल मेरे छोड़ गई।
इतनी बेरुखी तो न थी ये दुनिया,
जो तू जीने से मुंह मोड़ गई

- रक्षन्दा गोस्वामी
एम.एस.सी, भौतिक विज्ञान

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में,
तू जरा हिम्मत तो कर।
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में,
तू ज़रा कोशिश तो कर।
आंधियाँ सदा चलती नहीं,
मुश्किलें सदा रहती नहीं।
मिलेगी तुझे मंजिल तेरी,
बस तू ज़रा कोशिश तो कर
तू जिंदगी को जी,
उसे समझने की कोशिश ना कर।
चलते वक्त के साथ तू भी चल,
वक्त को बदलने की कोशिश न कर ..
दिल खोल कर साँस लें,
अंदर ही अंदर घुटने की कोशिश न कर..
कुछ बाते भगवान् पर छोड़ दें,
सब कुछ खुद सुलझाने
की कोशिश न कर....

- संकलनकर्ता, दयानंद शर्मा
(तकनीशियन, रसायन शास्त्र विभाग)

बदलाव

जिन्दगी में बहुत सारे अवसर ऐसे आते हैं जब हम बुरे हालात का सामना कर रहे होते हैं और सोचते है कि क्या किया जा सकता है क्योंकि इतनी जल्दी तो सब कुछ बदलना संभव नहीं है और क्या पता मेरा ये छोटा सा बदलाव कुछ क्रांति लेकर आएगा या नहीं लेकिन मैं आपको बता दूँ हर चीज़ या बदलाव की शुरूआत बहुत ही बुनियादी ढंग से होती है। कई बार तो सफलता हमसे बस थोड़े ही कदम दूर होती है कि हम हार मान लेते हैं जब कि अपनी क्षमताओं पर भरौसा रख कर किया जाने वाला कोई भी बदलाव छोटा नहीं होता और वो हमारी जिन्दगी में एक नीव का पत्थर भी साबित हो सकता है। चलिए एक कहानी पढ़ते हैं इसके द्वारा समझने में आसानी होगी कि छोटा बदलाव किस कदर महत्वपूर्ण है।

एक लड़का सुबह सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुओं की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला मैं आपको हमेशा इन कछुवों की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ आप ऐसा किस वजह से करते हो ? महिला ने उस मालूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया। मैं हर रविवार यहाँ आती हूँ और इन छोटे-छोटे कछुवों की पीठ साफ करते हुए सुख शांति का अनुभव लेती हूँ। क्योंकि इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कचता जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है इसलिए ये कछुवे तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमजोर हो जाते हैं इसलिए कवच को साफ करती हूँ।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान था। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रही हैं लेकिन फिर भी आप एक बात सोचिये कि इन जैसे कितने कछुवे है जो इनसे भी बुरी हालत में है जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकती तो बाकी कहओं का क्या क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा न।

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा लेकिन सोचो इस एक कछुवे की जिन्दगी में तो बदलाव आयेगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरूआत करें।

- संकलनकर्त्ता, दीपक कुमार
(तकनीकी सहायक, रसायन शास्त्र विभाग)

मंज़िल

राहों में चलते यूं ही,
कुछ यादों से मैं जा टकराया,
ठहरकर जब मैंने देखा उन्हें तो,
हर टुकड़े में मैंने तुझे पाया।

लगा समेटते जब इन तिनकों को,
वो हर पल तेरे अक्स को गुजरता पाया,
खुद को हर अक्स की हर नूर से जुड़ता पाया,
अकेला होते हुए भी खुद को तन्हा न पाया।

मन कहने लगा कि बस यहीं ठहर जा,
इन्हीं लम्हों में बस कहीं तू भी बस जा,
पर रूक न सका ये कारवां दिल का
क्योंकि उसको तो बस था अपनी ''मंजिल''
तक पहुंचना।

- मृत्युंजय त्रिपाठी
बी.टेक. (अंतिम वर्ष)
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

भ्रष्टाचार: कारण एवं निवारण

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट आचरण या निजी लाभ के लिए निर्वाचित राजनेता या नियुक्त सेवक द्वारा सार्वजनिक शक्ति का दुरुपयोग।

सरल शब्दों में कहें तो किसी भी व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने अधिकार का दुरुपयोग करना भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार एक विश्वव्यापी घटना है। शायद आपको जानकर आश्चर्य हो कि दुनिया की शीर्ष 50 भ्रष्ट देशों की सूची में भारत का नाम शामिल नहीं है।

अब ये बात और है कि उन्होंने किस आधार पर ये रिपोर्ट तैयार की है, पर इतना तो पक्का है कि भ्रष्टाचार कोई अकेले भारत या किसी और देश की समस्या नहीं है।

ये समस्या इंसान की है ..... जिसका क्रमिक विकास कुछ ऐसे हुआ है कि वो अपने फायदे के आगे औरों की नहीं सोचता। और शायद ये इंसान के स्वभाविक प्रकृति का ही परिणाम है कि भ्रष्टाचार सिर्फ चंद लोगों तक सीमित नहीं है बल्कि पूरा का पूरा समाज ही भ्रष्ट आचरण में लिप्त है। हाँ कुछ ऐसे लोग जरूर हैं जो ईमानदार हैं पर अधिकतर लोग कहीं न कहीं भ्रष्ट हैं।

वैसे तो परिभाषात्मक भ्रष्टाचार को सीधे सरकार और सरकारी अफसरों से जोड़ कर देखना चाहिए, लेकिन अगर कुछ देर के लिए हम इसकी परिभाषा को थोड़ा विस्तृत कर दें और सिर्फ सरकारी नहीं बल्कि आम लोगों की तरफ भी नजर उठा कर देखें तो हर तरफ बेईमानी दिख जायेगी।

1. दूध का धंधा करने वाला उसमें पानी मिलाता है।
2. सेहत दुरुस्त करने के नाम पर नकली दवाईयाँ बिकती है।
3. बिजनेस करने वाले अपने फायदे के लिए झूठ बोलने से नहीं चूकते।
4. बिजली चोरी को तो लोग अपना अधिकार समझते हैं।
5. स्कूल में प्रवेश के लिए डोनेशन की माँग की जाती है।
6. नौकरीपेशा आदमी टैक्स बचाने के लिए नकली चिकित्सा खर्चे लगाना गलत नहीं समझता।
7. सरकारी महकमो में भ्रष्टाचार के बारे में बताने की जरूरत ही नहीं है... उनके घोटाले लाख या करोड़ में नहीं होते लाख करोड़ में होते हैं....

पर इस लेख में, मैं अपनी बात सार्वजनिक भ्रष्टाचार या सरकारी भ्रष्टाचार तक ही सीमित रखूँगा... क्योंकि दरअसल यही वो भ्रष्टाचार है जो आम लोगों को भ्रष्ट बनने के लिए कभी मदद करता है तो कभी मजबूर।

अगर पब्लिक सेक्टर में भ्रष्टाचार नहीं होता तो देश की स्थिति बहुत अलग होती -

1. हमारे पास अच्छी सड़के होतीं और हादसों में हम अपनों को नहीं खोते।
2. हमारे पास चौबीसो घंटे बिजली होती और आधी आबादी को अँधेरे में जिन्दगी नहीं बितानी पड़ती।
3. हमारे पास बेहतर स्वस्थ्य सेवाएं होती ओर लोगों की जान इतनी सस्ती नहीं होती।
4. हमारे किसान खुशहाल होते और वो आत्महत्या नहीं करते।
5. हमारे सभी बच्चे स्कूल जाते और किसी को घूम-घूम कर कूड़ा उठाने की जरूरत नही हैं।
6. अगर यहाँ भ्रष्टाचार नहीं होता तो आज 1 अरब 21 करोड़ आबादी वाले देश के पास कम से कम 21 ओलम्पिक मैडल तो होते ही।

मध्यम वर्ग पर धनी लोगों के लिए भ्रष्टचार के मारे लोगों का दर्द समझना मुश्किल है... लेकिन बस एक बार सोच के देखिये ... आप गरीब घर में पैदा हुए होते और सरकारी योजनाओं में धांधली की वजह से आपका बचपन कूड़ा बीनने या ढाबों में काम करने में बीता होता तो आज कैसा महसूस करते है??

किसी भी भारतीय के मन में ये सवाल आना स्वाभाविक है कि आखिर हमारे देश में इतना भ्रष्टाचार क्यों है? पहले लोग कहा करते थे की सरकारी कर्मचारियों की आय कम होती है इसलिए वे बेईमानी से पैसा कमाते हैं पर वो एक कमजोर पक्ष था कई वित्त आयोग आ जाने के बाद भी बहुत से सरकारी अधिकारी भ्रष्टचारी गतिविधियों में लिप्त पाये जाते हैं यानि कारण कुछ और ही है, इसे थोड़ा समझते हैं-

मूलतः सरकार क्या है? वो हमीं लोगों के बीच में चुने गए जन प्रतिनिधियों का समूह और हम कैसे लोगों को चुन कर भेजते हैं ... ऐसे नहीं जो सबसे ईमानदार हों ..... बल्कि ऐसे जो कम बेईमान हों। विकल्प ही नहीं करें तो क्या?

नेताओं और अधिकारियों के ऑफिस में गांधी जी की सिर्फ तस्वीर लगी होती है सही मायने में वे भूल चुक होते हैं कि ईमानदारी भी कोई चीज होती है।

इसके अलावा व्यक्तिगत स्तर पर आदमी का लालच उसे भ्रष्टाचार बना देता है। ऊपर का अधिकारी ईमानदार हो तो भी अगर नीचे का आदमी भ्रष्ट हो तो वो अपने स्तर पर भ्रष्टाचार करता है। भ्रष्टाचार के और भी बहुत से कारण गिनाये जा सकते हैं, पर उससे क्या होगा? फायदा तो तब होगा जब इसका खात्मा करने के बारे में बात हो ...

भ्रष्टाचार को कैसे रोका जा सकता है?

1. माता पिता और शिक्षक के माध्यम से

जब कोई पिता बच्चे से कहता है कि जाओ अंकल से कह दो की पापा घर पर नहीं है तो वो जाने अनजाने अपने बच्चे के मन में भ्रष्टाचार का बीज बो रहा होता है।

जब माँ अपने बच्चे की गलती पर पर्दा डाल कर दूसरे के बच्चे को दोष दे रही होती है तो वो भी अपने बच्चे को गलत काम करने के लिए बढ़ावा दे रही होती है। जब कोई शिक्षक परीक्षा में नकल कराता है या ऐसे होते देख कर भी चुप रहता है तो वो भी अपने शिष्यों को भ्रष्टाचार का पाठ पढ़ा रहा होता है।

माता-पिता और शिक्षक आज जो करते हैं उससे कल के भारत का निर्माण होता है इसलिए बेहद जरूरी हो जाता है कि वे बच्चों को उच्चतम नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाएं और इस पाठ को पढ़ाने का सबसे सशक्त तरीका यही है कि वे उनके सामने कभी ऐसा आचरण न करें जो कहीं से भी गलत या अनैतिक व्यवहार का समर्थन करता हो।

2 .तकनीक का सही इस्तेमाल करके :

हम उपलब्ध तकनीकों के इस्तेमाल से भी भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यातायात नियमों का पालन हो रहा है या नहीं ये सुनिश्चित करने के लिए उच्च शक्ति के कैमरों का प्रयोग किया जा सकता है और नियम तोड़ने वाले से जुर्माना भराया जा सकता है। इससे लोग नियमों का पालन करेंगे ही और साथ ही लाखों ट्रक वालों और आम लोगों का शोषण भी कम हो जाएगा।

3. कानून को सरल बना कर :

हाल ही में सरकार ने जो तमाम करो को हटा कर एक जी.एस.टी. करने की पहल की है वो इस दिशा में एक अच्छा कदम है। धीरे-धीरे हमें और भी बहुत से कानून सरल और लोगों के हित के अनुसार बनाने होंगे।

4. सरकारी काम काज में पारदर्शता ला कर :

कुछ जगहों पर 'टेंडर्स' के लिए 'ऑनलाइन बिडिंग' का तरीका अपनाया जा रहा है, जो कि एक अच्छा कदम है। सरकारी काम काज जितनी पारदर्शता के साथ होगा भ्रष्टाचार के अवसर उतने ही कम होंगे। आर.टी.आई. कानून इस दिशा में एक बड़ा कदम है। इसे और सशक्त बनाने और इसके बारे में जागरूकता फैलाने की जरूरत हैं।

5. घूस लेने और देने वालों के लिए सख्त से सख्त सजा का प्रावधान करके:

सरकारी नौकरी को 100 प्रतिशत सुरक्षित माना जाता है, मतलब एक बार आप घुस गए तो कोई आपको निकाल नहीं सकता है। और अधिकार होता भी यही है। अगर कोई किसी भ्रष्ट आचरण में पकड़ा भी जाता है तो अधिक से अधिक उसे कुछ समय के लिए निलंबित कर दिया जाता है और वो पैसे खिला कर फिर से वापस आ जाता है।

इस चीज को बदलने की जरूरत है भ्रष्टाचार में लिप्त इंसान अपने फायदे के लिए करोड़ों लोगों का नुक्सान करता है, खराब सड़कें, दवाईयों और खान-पान की चीजें लोगों की जान तक ले लेती है और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति को सख्त से सख्त सजा मिलनी ही चाहिए। नौकरी से निकाले जाने के साथ साथ जेल और भारी जुर्माने का भी प्रावधान होना चाहिए। मीडिया को भी ऐसे लोगों को समाज के सामने लाने में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए।

6. समय रहते न्याय व्यवस्था

भारत में अपराधियों के बीच डर कम होने का एक बड़ा कारण है यहां की बेहद धीमी न्याय प्रक्रिया।

अपराधी जानता है कि अगर वो पकड़ा भी जाता हे तो उसे सजा मिलने में दशकों बीत जायेंगे इसलिए वो और भी निडर होकर अपराध करता है। फास्ट ट्रैक न्यायालय और नए जजों की नियुक्ति और नई तकनीक के प्रयोग से इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द तेज बनाया जाना चाहिए।

भ्रष्टाचार पहले ही करोड़ों बच्चों से उनका बचपन युवाओं से उनकी नौकरी और लोगों से उनका जीवन छीन चुका है। हमें किसी भी कीमत पर इसे रोकना होगा। आज आजाद भारत को एक बार फिर देशभक्तों की जरूरत है यदि हमें भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है तो हमें संसद में देशभक्तों को भेजना होगा तभी मानव सभ्यता का सबसे महान रहा हमारा भारत फिर से दुनिया का महानतम देश बन पायेगा और हम गर्व के साथ कह सकेंगे-''मेरा भारत महान''।

संकलनकर्त्ता - विकास सोनी
(तकनीकी सहायक)

पृष्ठ 1 का शेष ...

महामना : एक विलक्षण व्यक्तित्व

15 वर्ष की उम्र में मालवीय जी ने ''इतिहास समुच्चय'', ''मनुस्मृति'' और ''भगवद्गीता'' का अध्ययन किया। मकरंद उपनाम से कविता लिखना प्रारम्भ किया और उसे हरिशचन्द्र चन्द्रिका नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजा। बालक मदन मोहन ने अपनी प्रत्येक भूल का प्रायश्चित किया। वे बचपन में इतने प्रसन्न और चैतन्य रहते थे कि उनके मुहल्ले के एक घुरहू शाहू उन्हें मस्ता कहा करते थे। व्यायाम और संगीत मे भी उनकी रुचि थी। उनके स्कूल के दिन बड़ी मस्ती के दिन थे। कॉलेज में वे क्रिकेट और टेनिस भी खेलने लगे थे। उन्होंने अपनी जीवन में किसी सरकारी प्रशासनिक पद को प्राप्त करने की कभी कोई इच्छा नहीं की। उन्होंने जीवनभर देश की निःस्वार्थ सेवा की ओर इसी का दूसरों को उपदेश दिया।

''विवाह''

पण्डित मदन मोहन मालवीय बचपन में अपने चाचा गजाधर के यहाँ मिर्जापुर आया - जाया करते थे। एक बार मिर्जापुर में पण्डितों की सभा हो रही थी। किसी विषय पर शास्त्रार्थ चल रहा था। ये भी सभा में बैठे थे। इनकी भी बोलने की इच्छा हुई। चाचा से अनुमति लेकर बोले, एक तो उनका मधुर स्वर उस पर प्रामाणिक तर्क प्रस्तुत करना जिसने सुना उसने मदन मोहन की पीठ ठोकी, पंडित नन्दराम भी प्रभावित हुए और अपनी तृतीय पुत्री कुंदन देवी का विवाह करने के लिए पण्डित गजाधर प्रसाद से स्वीकृति ले आए और सन्1881 ई. में बीस वर्ष की उम्र में विवाह सम्पन्न हुआ।

धर्मपत्नी कुंदन देवी को अपनी ससुराल की आर्थिक दशा ने धैर्य और साहस के साथ निर्धनता के कष्ट सहन करने को बाध्य किया। उन्हें आधा पेट भोजन से संतोष करना पड़ता था। फटी धोतियाँ सिलकर पहननी पड़ती थी। एक दिन बहुत वर्षों बाद मालवीय ने उनसे पूछा, तुमने कभी अपनी सास से खाने-पहनने के कष्ट की शिकायत नहीं की? इस पर कुंदन देवी ने उत्तर दिया। शिकायत करके क्या करती ? वे कहाँ से देती घर का कोना-कोना जितना वे जानती, उतना मैं भी जानती थी। मेरा दुःख सुनकर वे रो देती और क्या करती?

मालवीय जी अपनी पत्नी के स्वभाव एवं व्यवहार से पूर्ण सन्तुष्ट थे। उन्होंने रामनरेश त्रिपाठी से अपने गार्हस्थ्य सुख की चर्चा की। कुन्दन देवी निश्चय ही बहुत साध्वी और भाग्यशाली सिद्ध हुई। उनके कारण पति की प्रतिभा का ऐसा विकास हुआ कि उन्हें देश के एक महान नेता की पत्नी होने का सुख मिला। उन्होंने 5 पुत्रों और 5 पुत्रियों को जन्म दिया।

''शिक्षा तथा अध्यापकीय जीवन''

परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण पण्डित बृजनाथ अपने पुत्रों को उच्च शिक्षा नहीं दिला सके। पाँच वर्ष की अवस्था में पण्डित मदन मोहन मालवीय का विद्यारम्भ हुआ और उन्हें एक पण्डित के पास महाजनी पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया। तत्पश्चात् बालक को श्रीमदक्षर पाठशाला भेजा गया। यह पाठशाला उसके संस्थापक और आचार्य श्री हरदेवजी के नाम पर हरदेव गुरुजी की पाठशाला के नाम से अधिक प्रसिद्ध थी। यहाँ उन्होंने लघु कौमुदी का अध्ययन किया। अपने सहपाठियों के साथ बालक मदन मोहन ने मनुस्मृति, गीता और नीति के अनेक श्लोक कंठस्थ किये। हरदेव गुरुजी अत्यधिक अनुशासन प्रिय थे। वे उचित वेशभूषा, नियमितता और सच्चरित्रता पर विशेष ध्यान देते थे। प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् मदन मोहन का नाम विद्याधर्मप्रवर्धिनी सभा की पाठशाला में लिखवाया गया। वहाँ के अध्यापक पण्डित देवकीनन्दन जी इस पाठशाला के सर्वेसर्वा थे जिन्होंने बालक के गुण पहचानकर बड़े मनोयोग से उसे प्रशिक्षित करने लगे। माघ मेले के अवसर पर प्रतिवर्ष वह इस ब्राह्मण बालक को संगम पर मेले में ले जाया करते थे और धार्मिक विषयों पर व्याख्यान देने के लिए प्रोत्साहन किया करते थे। 7 वर्ष के बालक ने भविष्य में सारे राष्ट्र की नौका खेने का पाठ त्रिवेणी संगम पर ही सीखा।

सन् 1868 में प्रयाग में गवर्नमेन्ट हाईस्कूल खुला और माताजी की आज्ञा से मालवीय जी ने वहाँ पढ़ना आरम्भ किया। वे अपने बड़े भाई जयकृष्ण के साथ स्कूल जाया करते थे। पण्डित मदन मोहन मालवीय पढ़ने में बहुत मन लगाते थे। ये भी संसार के अन्य अनेक महापुरुषों के समान गणित में कमजोर थे परन्तु बाद में परिश्रम करके इन्होंने अपनी कमी पूरी कर ली इनके घर पर पढ़ने की सुविधा नहीं होने के कारण ये सन्ध्या को लालटेन और पुस्तकें लेकर अपने मकान से थोड़ी दूरी पर सोहनलाल के बाग में अपने साथी गंगाप्रसाद के साथ पढ़ने जाते थे। स्कूल में भर्ती होने के बाद भी वे संस्कृत पढ़ने पाठशाला जाया करते थे। वहाँ उन्होंने पण्डित ठाकुर प्रसाद जी के मार्गदर्शन में निरन्तर संस्कृत का अध्ययन किया। मालवीय जी ने 16-17 वर्ष की उम्र में एन्ट्रेस (स्कूल लीविंग परीक्षा) उत्तीर्ण की।

एन्ट्रेस परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने अपने चचेरे भाई पण्डित जयगोविन्द से सम्पूर्ण काशिका पढ़ी तथा अपने चाचा गजाधर प्रसाद जी के निर्देशन में भागवत का अध्ययन किया। पण्डित गजाधर प्रसाद जी उस समय मिर्जापुर के गवर्नमेन्ट हाईस्कूल में हैड पण्डित थे। मदन मोहन प्रायः छुटियों में उनके पास जाया करते थे। एक बार वहीं धर्मसभा का अधिवेशन हो रहा था। अपने चाचा से अनुमति लेकर नवयुवक मदन मोहन ने भी वहाँ धर्म पर व्याख्यान दिया जिसकी बहुत प्रशंसा की गई।

एन्ट्रेस परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मदन मोहन म्योर सेन्ट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में पढ़ने लगे। परिवार के लिए कॉलेज की पढ़ाई का आर्थिक भार वहन करना कठिन था। फिर भी माता ने अनेक कठिनाईयाँ उठाकर अपना पेट काटकर, अपने जेवर गिरवी रखकर अपने बच्चे को बढ़ाने का निश्चय किया। प्राचार्य हैरिसन ने उन्हें एक मासिक छात्रावृत्ति प्रदान की फिर भी मदन मोहन मालवीय को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। कॉलेज में एक फ्रेन्डस् डिबेटिंग सोसायटी थी। उसमें जब मालवीय जी ने अपना पहला भाषण अंग्रेजी में दिया तब उस संस्था के मन्त्री, लाला सांवलदास ने उनका उत्साहवर्धन किया। मालवीय जी उन्हें उस्ताद कहकर पुकारते थे और सांवलदास जी उन्हें उनकी पढ़ाई में मदद करते रहते थे।

कॉलेज में एक बार शेक्सपियर का सुप्रसिद्ध नाटक मर्चेंट ऑफ वेनिसका मंचन किया गया। मदन मोहन मालवीय ने उसमें पोर्शिया का पार्ट बहुत ही खूबी से अदा किया। यदि कोई अंग्रेज महिला भी इस पार्ट को करती तो शायद इतनी खूबी से नहीं कर पाती। मालवीय जी ने आर्य नाटक मण्डली के तत्त्वावधान में एक बार शकुन्तला का अभिनय किया। जब शकुन्तला हाथ में घड़ा लिए, रंगमंच पर आयी तब दर्शक दंग रह गये। शकुनतला के श्रृंगार और करूणासिक्त अभिनय से दर्शक बहुत आनन्दित हुए।

म्योर कॉलेज के संस्कृत प्राध्यापक आदित्यराम भट्टाचार्य जी भी मालवीय से स्नेह रखते थे। लोक सेवा के कार्यों में अपने शिष्य की रुचि देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और जीवनभर अपने शिष्य की सार्वजनिक कार्यों में रुचि बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। शिष्य भी उनके साथ भक्ति युक्त आचरण करता रहा। श्री भट्टाचार्य ने प्रयाग में हिन्दू समाज नामक सभा सन् 1880 में स्थापित की जिसमें मदन मोहन का प्रमुख हाथ था। कालान्तर में यह सभा केन्द्रिय हिन्दू समाज के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

महामना जी के व्यक्तित्व के कुछ और अनछुऐ पहलू अगले अंक में ....

- ज्योति जोशी
संपादक एवं सह आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग

चलता चल मुसाफिर

जीवन के इस दुर्गम पथ पर,
निरंतर चलता चल मुसाफ़िर,
रोकेंगी तुझको लाखों बाधाएँ पर
निडर चलता चल मुसाफ़िर।

कौन है अपना, कौन, पराया, करना होगा चुनाव
जानना पड़ेगा कौन विरोधी, कौन है पक्षधर,
होगा निस्संदेह चट्टानों से भी टकराव
उठना, संभलना हर बार तू गिर,
चलता चल मुसाफ़िर

होगा पतझड़ बाद हर सावन के
जैसे रात अँधेरी बाद हर वासर,
सतत बढ़ेगा जो ओर लक्ष्य मनभावन के
ईश्वर भी झुकेगा उसकी खातिर
चलता चल मुसाफिर।

पाऊँगा अवश्य ही मैं अपनी मंज़िल
उठ इसी आशा के साथ हर सहर,
जीवन नौका का बनकर कुशल खैवया
खैना उसे ऐसे कि जाए तू तिर
चलता चल मुसाफ़िर।

जब शीघ्र ही होने को हो सूर्यास्त
हो प्रसन्न उसमें जो पाया दौरान इस सफ़र,
अब भी ना होगा जो तू परास्त
याद करेगी दुनिया तुझको फ़िर-फ़िर
अब थम जा तू मुसाफ़िर,
अब थम जा तू मुसाफ़िर।

- हर्षित जैन
(प्रथम वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी)

इस काल में सबसे अच्छा गुण है, कम बोलना।

सम्पादक डॉ. ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
सदस्य, सम्पादक मंडल : अशोक अग्रवाल, अंशु सक्सैना, दीपक कुमार
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalaceindia.com